International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 206-207

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 206-207
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-07-2020
Accepted: 22-09-2020

डॉ. मेधा कुमारी
एम. ए. पीएचडी। संस्कृत, आर.यू.एम स्कूल, नापावली, सीवान, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मेधा कुमारी
एम. ए. पीएचडी। संस्कृत, आर.यू.एम स्कूल, नापावली, सीवान, बिहार, भारत

काव्य प्रकाश में काव्य हेत

डॉ. मेधा कुमारी

प्रस्तावना
काव्यप्रकाश में मम्मटाचार्य ने काव्य–हेतुओं का सविस्तार विवेचन किया है। यहाँ हम मम्मटाचार्य की समन्वयात्मक दृष्टि का अवलोकन करते है। काव्यप्रकाशकार के समक्ष उनके पूर्ववर्ती आचार्यों की विचार–सामग्री उपलब्ध थी। अतः ये सभी साग्रियों में समन्वय स्थापित कर शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास को काव्यरचना का हेतु स्वीकार करते हैं। यथा –

''शक्तिनिपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।[1]

अर्थात् काव्यसृजन की शक्ति, लोककाव्य तथा शास्त्रादि के निरीक्षण एवं अनुशीलनजन्य निपुणता और काव्यज्ञ आचार्यों की शिक्षा को प्राप्त कर अभ्यास करना ये तीन काव्य के हेतु है।

प्रतिभा :
भारतीय साहित्याचार्यों ने माना है कि काव्य की एक ही प्रेरणा शक्ति होती है जिसे प्रतिभा कहते हैं। इसी शक्ति से सम्पन्न होकर मानव कवि बन जाता है। इस प्रतिभा की परिभाषा करते हुए प्रसिद्ध आलङ्कारिक भामह ने कहा है कि मूर्ख मनुष्य भी गुरू से शिक्षा लेकर शास्त्र का साङ्गोपाङ्ग ज्ञान कर सकता है किन्तु काव्य–सृजन की प्रेरणा उसी व्यक्ति में होगी जिसमें प्रतिभा होगी।

''गुरूपदेशादध्येतुं शास्त्र जडधियोऽप्यलम्।
काव्यन्तु जायते जातु कस्यचित प्रतिभावतः इत्येनेन।।

यदि कोई व्यक्ति प्रतिभाशील हुए बिना ही काव्य रचना में प्रवृत होता है तो वह निश्चितरूप से उसमें अनेक दोष उत्पन्न कर ही देता है, किन्तु प्रतिभा सम्पन्न कवि अवद्य रचना कथमपि कर ही नहीं सकता है। प्रतिभा सम्पन्न कवि की रचना कभी निन्दित नहीं हो सकती। भट्टतौत ने प्रतिभा का लक्षण बताया है–

''प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभामता''।।
नई–नई बातें सुझाने वाली प्रज्ञा ही प्रतिभा कहलाती है।
'वक्रोक्ति जीवित' में कुन्तक ने अपना विचार व्यक्तत किया है–
''प्राक्तनाद्यतन संस्कार परिपाक प्रौढ़ा प्रतिभा काचिदेव कविशक्तिः''।।[2]

अर्थात् पिछले जन्म और इस जन्म के संस्कार से पककर दृढ़ बनी हुई अनोखी कवित्वशक्ति ही प्रतिभा कहलाती है।

काव्य प्रकाशकार ने कहा है–''
शक्तिः कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः यां विना
काव्यं न प्रसरेत् प्रसृतं वा उपहसनीयं स्यात्''।।[3]

निपुणताः
लोकव्यवहार, शास्त्र अर्थात् छनद, व्याकरण, कोश, कला, पुरूषार्थ– चतुष्टय, हाथी, घोड़े, असि आदि के स्वरूप प्रतिपादक ग्रन्थों और महाकवियों के काव्यों तथा समासादि के अनुशीलन से प्राप्त निपुणता व्युत्पत्ति होती है–

''लोकस्य स्थावर जङफगमात्मकस्य लोकवृतस्य शास्त्राणां छन्दोव्याकरणाभि धानकोशकला चतुर्वर्ग गजतुरगरवङ्गादि ग्रन्थानां, काव्यानां च महाकवि सम्बन्धि नामादिग्रहणा– दितिहासादी नां च विमर्शनाद् व्युत्पतिः।''[4]

अभ्यास :

आचार्य दण्डी ने भी प्रतिभा को काव्य का कारण माना है। इन्होंने शास्त्रज्ञान और अभयास को भी जोड दिया है। इनके विचार से केवल प्रतिभा से ही काव्य का स्फुरण नहीं होता, उसके साथ शास्त्रों का परिचय तथा काव्य रचना का अभ्यास भी अपेक्षित है उसने भी काव्यादर्श में प्रतिभा को स्वाभाविक मानकर उसे पूर्वजन्म की वासना बतलाया है। काव्यस्रष्टा तथा विवेचक के उपदेशानुसार काव्यनिर्माण और शब्द योजना में बार–बार प्रयत्न अभ्यास कहलाता है।

''काव्यं कर्तु विचारयितुं च ये जानन्ति तदुपदेशेन करणे योजने च पौनः पुण्येन प्रवृत्तिरिति।।''

ये तीनों शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास काव्य रचना के समन्वित कारण है। आचार्य मम्मट के निर्दिष्ट हेतु निरूपण के विहंगावलोकन के अनन्तर हम कह सकते हैं कि मम्मट ने पूर्ववर्ती सभी आचार्यों द्वारा प्रतिपादित विचारों को आत्मसात् कर स्पष्टरूप से तीन काव्यहेतुओं को स्वीकार किया और मम्मट की कारिका पर रूद्रट का विशेष प्रभाव है, क्योंकि वे इन तीनों तत्त्वों के महत्व को स्वीकार कर कहते है–

''त्रितयमिदं व्याप्रियते शक्तिर्व्युत्पत्तिरभ्यासः।[5]

आचाय मम्मट के अनुसार उत्कृष्ट काव्य निर्माण के लिए शक्ति, निपुणता, तथ अभ्यास का योग अपेक्षित है। राजशेखर प्रतिभा एवं शक्ति को भिन्न तत्व स्वीकार करते है। ध्वनिवादी अनन्दवर्धन एवं अभिनयगुप्त दोनों का ऐक्य प्रतिपादित करते हैं। आचार्य मम्मट ने शक्ति शब्द का प्रयाग किया है तथा प्रतिभा को उसका पर्याय माना है।

राजशेखर जिस अभ्यास को महत्वपूर्ण मानते, वह न तो काव्य का मुख्य हेतु है और न आवश्यक हेतु। अभ्यास से केवल कवि की प्रतिभा तथा तत्प्रणीत काव्य में सौन्दर्य तथा परिवकार आता है। इसीलिए मम्मट ने कारिका में 'हेतु' शब्द का प्रयाग किया है, 'हेतवः का नहीं' –

''त्रयः समुदिता न तु व्यक्तास्तस्य काव्यस्योद्भवे निर्माण समुल्लासे च हेतुर्न तु हेतवः।

प्रतिभा एक सहज स्वाभाविक नैसर्गिक तत्व है। यह नवीन–नवीन उद्भावना करने में समर्थ है। प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति का काव्य हार्दिक अनुभूति का अभिव्यञजक होता है। प्रायः सभी आचार्यों ने प्रतिभा के अस्तित्व की सराहना की है व्युत्पति प्रतिभा से भिन्न तत्व है यह तो चराचर जगत् जीवन के अनुभव शास्त्रानुशीलन तथा अन्यान्य ग्रन्थों के अध्ययन, मनन एवं चिन्तन से सम्भत एक तत्व है। रूद्रट ने इसका स्पष्टीकरण किया है–

'छन्दो व्याकरण कलालोकस्थितिपदपदार्थविज्ञानात् युक्तायुक्त विवेको व्युत्पत्तिरियं समासेन।।[6]

हेमचन्द्र भी लोक–शास्त्र और काव्य में निपुणता को व्युत्पत्ति कहते है–

''लोकशास्त्रकाव्येषु निपुणता व्युत्पत्तिः''[7]

किन्तु व्युत्पत्ति के द्वारा प्रतिभा के अभाव की पूर्ति नहीं हो सकती है अन्यथा प्रत्येक विद्वान कवि और साहित्यकार बन जाता।

आचार्य मम्मट के 'निपुणता' शब्द की व्युत्पत्ति के रूद्रट के प्रभाव का सहज अनुसन्धान किया जा सकता हैं। व्युत्पत्ति के अभाव में यद्यपि केवल प्रतिभा के द्वारा काव्य की रचना सम्भव है, किन्तु वह उत्कृष्ट काव्य रचना नहीं होगी।

उपर्युक्त शक्ति एवं निपुणता के अतिरिक्त अभ्यास का योगदान भी काव्य रचना में होता है। व्यापक दृष्टि से विचार करने पर अभ्यास एवं व्युत्पत्ति में विशेष अन्तर नहीं है। अभ्यास का परिपाक ही व्युत्पत्ति है। अस्तु, इन दोनों में कुछ अन्तर है कि शास्त्रों के अध्ययन, से उत्पन्न ज्ञान के आधार पर कवि द्वारा काव्य निर्माण में पौनः पुन्येन प्रवृति ही अभ्यास है–

''काव्यं कर्तुं विचारयितुं च ये जानन्ति तदुपदेशेन करणे योजने च पौनः पुन्येन प्रवृतिरिति।[8]

काव्यहेतु निरूपण की परम्परा में आचार्य मम्मट ने विभिन्न मतों में समन्वय स्थापित किया है। एक ओर जहाँ ध्वनिवादी आचार्य, राजशेखर तथा मङ्गल आदि विभिन्न धारणाओं के पोषक है वहाँ मम्मटाचार्य अनेकता में एकता की स्थापना कर समन्वयात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

परवर्तीकाल में काव्यहेतु सम्बन्धी मान्यताओं में पुनः कुछ परिवर्तन होता है। समन्वयवादी होने पर भी मम्मटाचार्य शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास के महत्व को स्वीकार करते हैं। वहीं द्वादशशतक के वाग्भट्ट प्रथम केवल प्रतिभा को काव्य का हेतु, व्युत्पति को उसका आभूषण तथा आवश्यक स्वीकार नहीं करते है।[9] यही विचारधारा जयदेव को भी अभिप्रेत है। चन्द्रालोक 1/6 में इनका कहना है कि जैसे मिट्टी और जल से युक्त बीज लता की उत्पत्ति का हेतु है, उसी प्रकार व्युत्पत्ति और अभ्यास से युक्त प्रतिभा काव्य का हेतु है। काव्य शास्त्र के अन्तिम आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ प्रतिभा को काव्य का कारण मानते हैः व्युत्पत्ति और अभ्यास को हेमचन्द्र के समान काव्य का कारण न मानकर वे प्रतिभा को कारण मानते है।

अतः मम्मट के ये तीनों शक्ति, निपुणता तथा अभ्यास दण्डचक्रादिन्याय से काव्य निर्माण तथा उसके उत्कर्ष के हेतु है। जिस प्रकार घट–निर्माण में दण्ड तथा चक्र परस्पर सहयोगी होते है, उसी प्रकार शक्ति आदि भी परस्पर सापेक्ष होकर काव्य निर्माण करते है। इसीलिए मम्मट ने कारिका में 'हेतु' शब्द का प्रयाग किया है और वृति में अपनी मान्यता को अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ संकेत :–

1. काव्यप्रकाश – 1/3 : भामह काव्यालङ्कार सूत्र
2. कुन्तकाचार्य, काव्यप्रकाश – 1/3
3. काव्य प्रकाश – 1/3
4. वही
5. काव्यालङ्कार रुद्रट – 1/1/4, काव्यप्रकाश – 1/3 वृत्ति रुद्रट – 1/18
6. रुद्रट – 1/19
7. हेमचन्द्र – पृ0 – 5
8. काव्य अलङ्कार, वाग्भट्ट, पृ0 – 2